International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.328
Vol.9 No.2 Nov – Dec 2021

भारत के बिहार जिले में महिला साक्षरता एक अवलोकल

डॉ. बंदना श्रीवास्तव

मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार

वास्तव में महिला को हमारे देश में नारी के रूप में जगत जननी के रूप में सम्मान जनक दृष्टि से देखा जाता है। वहीं दूसरी ओर हम आहयात्म की रूप रेखा में इन्हें देवी की शंज्ञा से नवाजते हैं।

परंतु साथ-साथ हम यह भी जानते हैं की हमारा भारतीय समाज चाहे वह बिहार की पृष्ठभूमि हो यहॉ पूरुष प्रधान समाज की प्रद्यानता है।

हमारे प्राचीन युग में स्त्रियों की स्थिती सम्मानजनक थी। वहापर उन्हें युद्व या यज्ञ जैसे शुभ कार्यो के सम्पादन का अधिकार प्राप्त था। परंतु जैसे-जैसे संस्कृति या सम्यता का विकास होता गया इनकी स्थिती में निरन्तर गिरावट की छवी देखी गयी।

जहॉ तक हमारे वर्तमान परिवेश की बात अगर की जाय तो वहॉ हम आधूनिक विचारधारा में यह पाते हैं की एक नये बदलाव के परिणाम स्वरूप् स्त्रियों की स्थिती एवं शिक्षा में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है परंतु विडम्बना यह है की हम अभी तक उन मूल उदेश्यों को शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त नहीं कर पाये हैं जिसकी हमने तहे दिल से कामना की थी।

जहा तक हमारे बिहार जिले के साक्षरता में महिलाओं के स्थान की बात अगर की जाय वहॉ इसकी स्थिती को हम निम्न ऑकडों की सहायता से इंगित कर सकते हैः-

I. बिहार में साक्षरता दर ६१.८०% है। बिहार में पूरुष साक्षरता दर ७१.२०% है और महिला साक्षरता दर ५१.५० % है।
II. वहीं दूसरी ओर यदि भारत की बात की जाय तो देश में पूरुष साक्षरता दर ८२.१४ % और महिलाओं के लिये ६५.४६ % है।
III. यह एक समस्नीय तथ्य है की अन्य देशों एवं राज्यों की तुलना में हमारे देश एवं राज्य में महिलओं की साक्षरता दर पूरूषों की अपेक्षा अत्यन्त हीं कम एवं दयनीय है यह उपयूक्त नहीं है।

बिहार में महिलाओं की निरक्षरता के निम्नलिखीत मुख्य कारण हैं:

1. कम उम्र में शादी
2. बिहार में महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिती
3. भुगतान में असमानता
4. पुरूष पारिवारिक सदस्यों द्वारा सामाजिक राजनीतिक अधिकारों को प्रतिबंधित करना
5. महिलाओं से संबंधित बाधायें
6. परिवारिक अर्थव्यवस्था संबंधी कठिनाइयों
7. गृह-कार्यों में पारिवारिक सदस्यों का सहयोग न होना
8. समय की बचत एवं कार्य का सरनीकरण न होना
9. अस्वस्थ पारिवारिक समस्याए
10. मनसिक तनाव
11. आय संबंधी समस्याए
12. रूढिवादिता एवं समसयाए
13. असंतोषजनक वातावरण

इस प्रकार अगर हम हमारे बिहार जिले के संदर्भ में यदि बात करें तो यहॉ महिलाओं की वास्तविक स्थिती अत्यधिक जर्जर हालत में देखी जाती है। शिक्षा तो दूर की बात है वहॉ उन्हें पर्याप्त मान-सम्मान एवं उचित जीवन-प्रणाली भी नसीब नही होता है।

वहीं दूसरी ओर उन्हें दैनिक जीवनो पयोगी वस्तुओं और सेवाओं के लिये भी संघर्ष करना पड़ता है। अतः इस प्रकार इनके निरक्षरता के कारणों को निम्न प्रकार से स्पस्ट किया जा सकता हैः

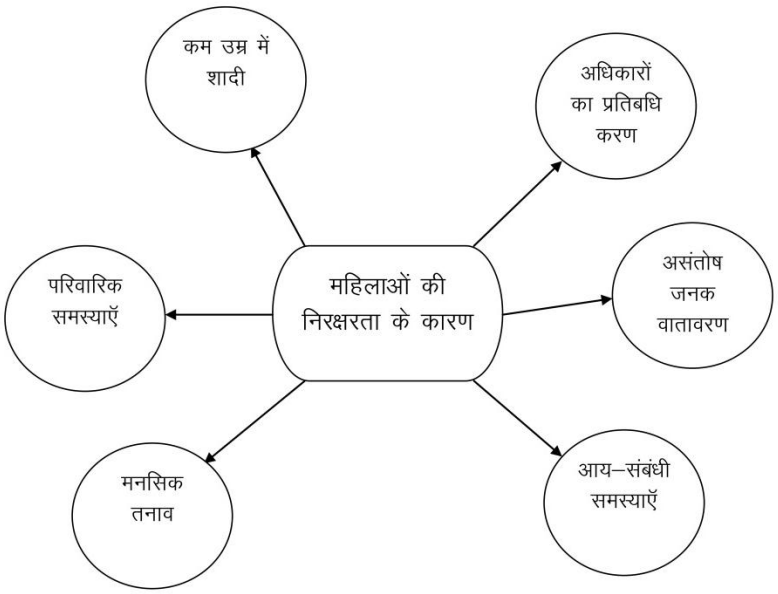

बिहार में महिलाओं की साक्षरता दर को बढान के लिये सरकार द्वारा उठाये गये कदमः

I. महिलाओं को सामाजिक गतिशीलता प्रदान करना।
II. महिलाओं की विकास की मुख्यधारा से जोड़ना।
III. शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं के लिये आरक्षण का प्रावधान।
IV. निती और व्यावहारिक हस्तक्षेप का मिप्रित द्रष्टिकोण अपनाना।
V. महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता प्रदान कराना।
VI. आरक्षण की सुविधा।
VII. राजनीतिक जगरुकता।
VIII. पैत्तक सम्पति में अधिकार।
IX. दहेज विरोधी कानुन बनाना।
X. परम्परगत भुमिकाओं में परिवर्तन।
XI. महिला प्रशिक्षण सम्बन्धी केन्द्र की स्थापना।
XII. घरेलू सहायता सेवाए प्रदान कराना।
XIII. नौकरी करने की छूट दी जानी चाहीये।
XIV. महिला रोजगार की व्यवस्था करना।
XV. स्त्रियों के लिये विशेष शिक्षा एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था।
XVI. पति एवं पत्नी को नौकरी करवाने की सुविधा प्रदान करना।
XVII. मातृत्व अवकाश की सुविधा महिलाओं को प्रदान कराना।
XVIII. पर्दा-प्रथा को जड़ से खत्म किया जाना चाहीए।

इस प्रकार उपर्युक्त शीर्षकों को हम निम्न रेखाचित्र की सहायता से भी स्पष्ट कर सकते हैः-

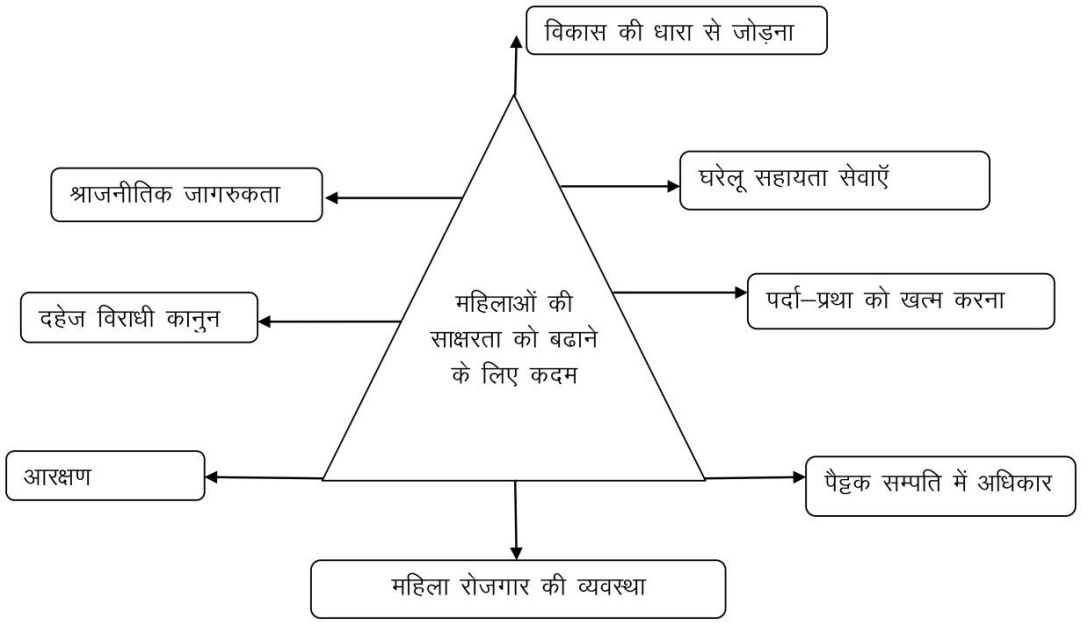

निष्कर्ष:

अतः इस प्रकार हमारे भारतीय समाज में बिहार राज्य के अंतर्गत यदि देखा जाय तो वर्तमान समय में भी महिलाओं कि वास्तविक स्थिती अत्यन्त ही दयनीय है चूकि शैक्षिक परिवेश में बिहार में सबसे ज्यादा महिला साक्षरता दर मुंगेर में है जो ६५.५३ है। वहीं दूसरी ओर बिहार में सबसे कम महिला साक्षरता दर मुंगेर में है जो ४२.७३ है।

इस प्रकार यदि जितनी ज्यादा संख्या में महिलाओं को शिक्षित किया जायेगा उतना ही ज्यादा हम उनकी समस्याओं को जड़ से खत्म कर सकते हैं।

दूसरे शब्दों में शिक्षा रुपी हथियार को अपनाकर हीं महिलाओं कि जा सकती है।

सन्दर्भ सुची:

१. द वूमेन एजुकेशन - राधाकृष्णन
२. भारत में नारी शिक्षा – एस. पी. अग्रवाल एवं जे. सी. अग्रवाल
३. डॉ. पी. भी. नायक - भारत में विकासात्मक नारी शिक्षा